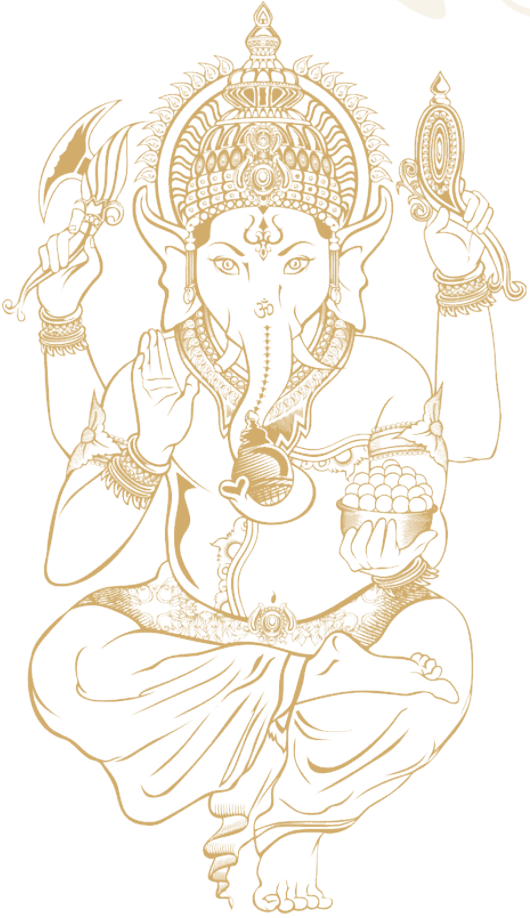

Mr.

29 Oct 2025

07:11 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119945201

तिथि 29/10/2025 **समय** 07:11:00 **वार** बुधवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:07
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	09:36:49 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:16:20 घं	योनि	नकुल
सूर्योदय	06:13:01 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	17:23:44 घं	वर्ण	वैश्य
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	जलचर
शक संवत	1947	वर्ग	सिंह
मास	कार्तिक	युँजा	अन्त्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	भूमि
तिथि	7	जन्म नामाक्षर	जा-जामवंत
नक्षत्र	उत्तराषाढ़ा	पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
योग	धृति	होरा	बुध
करण	वणिज	चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी
सूर्य 2वर्ष 5मा 22दि
सूर्य
29/10/2025
21/04/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	29/10/2025
शनि	08/02/2026
बुध	15/12/2026
केतु	22/04/2027
शुक्र	21/04/2028

योगिनी
संकटा 3वर्ष 3मा 20दि
संकटा
29/10/2025
17/02/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	29/10/2025
भद्रिका	30/03/2026
उल्का	30/07/2027
सिद्धा	17/02/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:24:22	तुला	विशाखा	2	गुरु	शनि	---	0:00			
सूर्य			11:39:54	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	नीच राशि	1.17	अमात्य	पितृ	क्षेम
चंद्र			04:29:28	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	सम राशि	1.30	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			01:09:32	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	मंगल	स्वराशि	1.22	ज्ञाति	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			05:22:15	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	सम राशि	1.51	भ्रातृ	ज्ञाति	साधक
गुरु			00:37:47	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.10	कलत्र	धन	प्रत्यारि
शुक्र			24:40:21	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	नीच राशि	1.00	आत्मा	कलत्र	विपत
शनि	व		01:43:02	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.85	पुत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		22:47:39	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		22:47:39	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

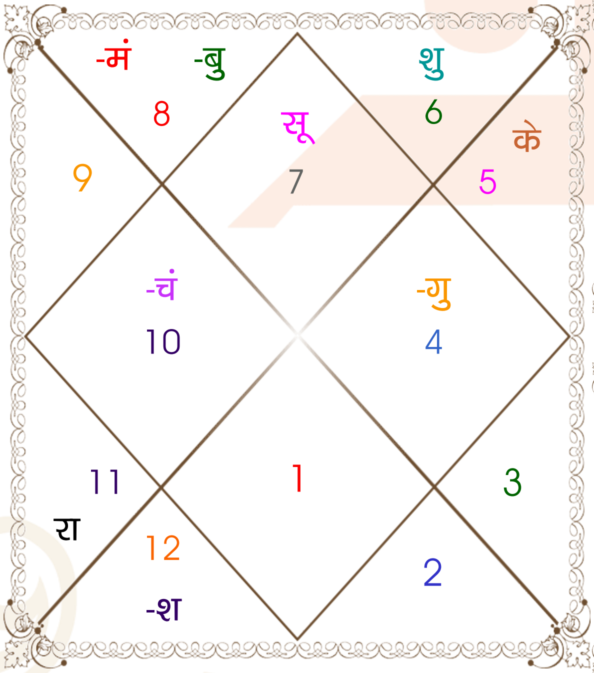

चन्द्र कुंडली

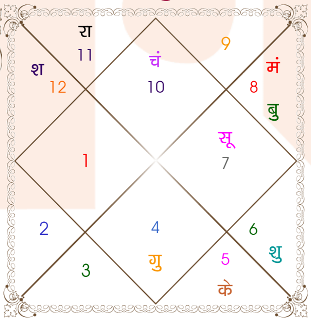

नवमांश कुंडली

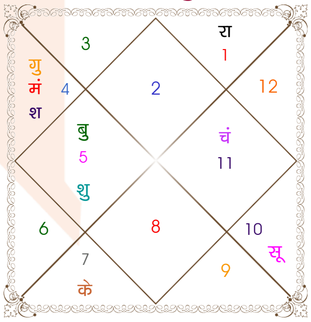

सर्वाष्टकवर्ग

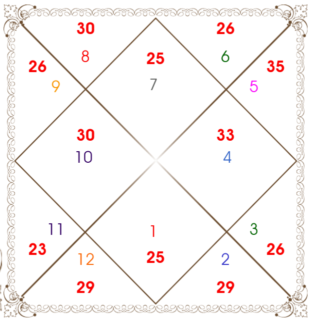

दशमांश कुंडली

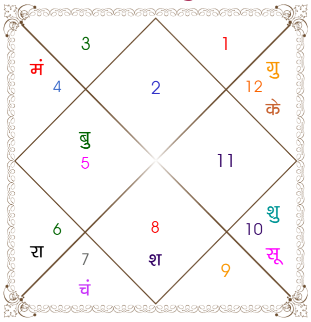

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आप उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मकर तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण मनुष्य, वर्ण वैश्य, नाड़ी अन्त्य, योनि नकुल तथा वर्ग सिंह होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ज" या "जा" अक्षर से होगा। यथा- जगदीश, जगमोहन आदि।

आप अपने समाज में एक गणमान्य व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों से आप उचित मान सम्मान एवं आदर प्राप्त करेंगे। आप में सात्विक गुणों की प्रधानता रहेगी तथा आपातकाल में भी बुद्धिमता एवं शान्त स्वभाव से समस्याओं का सामना करेंगे तथा उनका समाधान निकालेंगे। आप सम्पूर्ण जीवन काल में समस्त भौतिक सुख सुविधाओं से सुसम्पन्न रहकर प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे। धन दौलत का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा प्रायः इनसे सुसम्पन्न ही रहेंगे। शास्त्रों के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा परिश्रमपूर्वक इनका आप ज्ञानार्जन करेंगे। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में भी आप पारंगत रहेंगे। अतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आप ख्याति प्राप्त करेंगे।

मान्यः शान्तगुणः सुखी च धनवान् विश्वर्क्षजः पंडितः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक सम्माननीय सात्विक गुणों से युक्त, सुखी, धनवान तथा पंडित होता है।

आपका स्वभाव हमेशा विनयशील रहेगा तथा अन्य जनों से आपका हमेशा विनम्र व्यवहार रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही समस्त धार्मिक कृत्यों का भी आप पालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे एवं धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रदर्शन करेंगे। आपके मित्रों की संख्या भी प्रचुरमात्रा में रहेगी तथा सभी मित्रों से आपको यथोचित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा मन से उनके प्रति आभार प्रदर्शन करेंगे। इसके साथ ही समाज के सभी वर्गो में आप लोकप्रिय रहेंगे एवं प्रयत्न पूर्वक उनकी सेवा करते रहेंगे।

वैश्वे विनीत धार्मिक बहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च।।
वृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य विनयशील, धार्मिक, बहुत मित्रों वाला कृतज्ञ तथा सर्वजनों में लोकप्रिय होता है।

आपका शारीरिक कद लम्बा होगा तथा शरीर से आप स्थूल भी हो सकते हैं। आप एक शूरवीर व्यक्ति होंगे तथा बहादुरी से अपने समस्त संसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त विवाद आदि में आप शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगे।

बहुमित्रो महाकायो जायते विनीतः सुखी।
उत्तराषाढ़सम्भूतः शूरश्च विजयी भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक अधिक मित्रों वाला, विशाल शरीराकृति से युक्त, विनयी, सुखी, शूरवीर और सर्वत्र विजय प्राप्त करता है।

आपके मन में नैसर्गिक रूप से दानशीलता की भावना विद्यमान रहेगी। अतः जीवन में समय समय पर यथा शक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप अच्छे कार्यो को सम्पन्न करने वाले व्यक्ति होंगे तथा दुष्कर्मों के प्रति आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी। आपके सत्कार्यो से अन्य सामाजिक जनों को भी लाभ पहुंचेगा। धन वैभव से पूर्ण रूपेण सम्पन्न होने के कारण समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व व्याप्त रहेगा तथा सभी लोग आपकी प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आप स्त्री तथा पुत्रादि संतति से युक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन को व्यतीत करने में सफल रहेंगें। शरीर से आप सुन्दर रहेंगे तथा सभी लोग आप के सौन्दर्य की प्रशंसा करेंगे। कभी कभी आप अभिमानी वृति का भी प्रदर्शन करेंगे।

दाता दयावान विजयी विनीतः सत्कर्मकर्ता विभुता समेतः।
कान्तासुतावाप्त सुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, विजयी, विनयशील, सत्कार्यकर्ता, प्रभुत्व सम्पन्न, स्त्री और सन्तान से सुखी, अच्छे स्वरुप वाला तथा अभिमानी होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पतियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीङा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

मकर राशि में जन्म होने के कारण आपका कद ऊंचा तथा ललाट विशाल रहेगा। आप शरीर से विशेष बलवान नही होंगे परन्तु आखें अत्यन्त ही सुन्दर होगी। साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। संगीत के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेंगी तथा इसका आपको

विस्तृत ज्ञान भी रहेगा। ठंड से आप काफी व्याकुलता का आभास करेंगे एवं इसको सहन करने में अपने आपको असमर्थ सा महसूस करेंगे। सत्य के प्रति आपके मन में विशेष निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए जीवन में सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप में क्रोध का भाव अल्प मात्रा में विद्यमान रहेगा परन्तु कामभावना की आपमें अधिकता रहेगी। आप के मन में अन्य लोगों के प्रति प्रेम तथा स्नेह का व्यवहार रहेगा तथा घृणा या द्वेष अकारण किसी के प्रति आपके मन में नही रहेगा। इसके साथ ही अपनी आयु से अधिक आयु वाले व्यक्तियों से मित्रता करने के भी इच्छुक रहेंगे। लेखन कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी अतः काव्य सृजन के क्षेत्र में आप सफलता अर्जित कर सकेंगे। आप पूर्ण रूप से उत्साही नही रहेंगे फिर भी कार्यों को सम्पन्न करने में आपकी रूचि रहेगी। इसके

गीतज्ञः शीतभीरूः पृथुलतरशिराः सत्यधर्मोपसेवी
प्रांशुः ख्यातोऽल्परोषो मनसिभवयुतो निर्धृणस्त्यक्तलज्जः।।
चार्वक्षः क्षामदेहो गुरूयुवतिरतः सत्कविवृतजङ्घो
मन्दोत्साहोऽतिलुब्धः शाशिनि मकरगे दीर्घकण्ठोऽतिकर्णः।।
सारावली

आप अपने स्त्री तथा पुत्रों सहित उनके लालन पालन में अधिक रूप से व्यस्त रहेंगे तथा बाह्य रूप से धर्मानुपालन में भी तत्पर रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। आप अत्यन्त ही सरल विचारों के व्यक्ति होंगे तथा अन्य लोगों की बातों से शीघ्र ही सहमत हो जाएगे तथा उनके कहे अनुसार ही करने को तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति आलस्य प्रधान भी रहेगी अतः आपके कार्य शनै शनै ही सम्पन्न होंगे लेकिन आप एक सौभाग्य शाली पुरूष होंगे तथा आपके प्रमुख कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाएंगे। यात्रा एवं घूमने फिरने के आप विशेष शौकीन रहेंगे तथा अपना अधिकाँश समय यात्रा तथा एवं भ्रमण में ही व्यतीत करेंगे। शारीरिक बल से आप प्रायः युक्त ही रहेंगे। आप अगम्य स्थानों तथा कठिन कार्यों को करने के लिए सर्वप्रकार से तत्पर रहेंगे जिससे लोग आपके साहस से प्रभावित होंगे। कभी कभी आपके मन में कठोरता का भाव भी उत्पन्न होगा जिसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। जीवन में आप कई बार वात से उत्पन्न रोगों से पीड़ित रहेंगे। इनसे आपको समय समय पर परेशानी तथा कष्टानुभूति होती रहेगी। इसके अतिरिक्त सद्गुणों की भी आपमें प्रधानता रहेगी तथा इनका आप जीवन में यत्नपूर्वक पालन करते रहेंगे।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः।
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वधिकः काव्यकृत्।।
लुब्धोऽगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः।।
बृहज्जातकम्

आप अपने परिवार में विशेष स्थान प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा कुल की रीति एवं मर्यादाओं का पालन करने में अग्रणी रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उसकी वृद्धि करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आप पूर्ण रूप से स्त्री के वश में रहेंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को

उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा अतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आप आदरणीय तथा प्रसिद्ध रहेंगे। आप महिलावर्ग के मध्य भी लोकप्रिय रहेंगे तथा वे आपको पूर्ण सम्मान तथा प्रशंसा का पात्र समझेंगी। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा पूर्ण सुख को आप प्राप्त करने में सफल रहेंगे। बन्धुवर्ग के प्रति आपका विशेष मोह रहेगा तथा उनका पूरा लालन पालन स्वयं करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन दौलत का भी आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे प्रायः सम्पन्न ही रहेंगे। त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगे तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे।

कुले नष्टो वशः स्त्रीणां पंडितः परिवादकः।
गीतज्ञो ललिताग्राहयो पुत्राढ्यो भातृवत्सलः।।
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः।
परचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः।।
मानसागरी

आपके अधिकांश नौकर सुन्दर एवं सद्‌गुणों से युक्त रहेंगे। आपके मन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा एवं सहायता करने के लिए आप सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परिवार के सदस्य संख्यां भी प्रचुर मात्रा में रहेगी। सुख की प्राप्ति के लिए आप विशेष चिन्तित रहेंगे तथा उसको प्राप्त करने के लिए आजीवन तत्पर रहेंगे। आप अपने जीवन में किसी अन्य मित्र व्यक्ति या संबंधी की धन सम्पति का उपभोग करने वाले होंगे तथा सामाजिक जनों का हित चिन्तन भी करते रहेंगे एवं उनके हित के लिए कुछ न कुछ कार्य अवश्य सम्पन्न करते रहेंगे। आप एक चतुर सलाहकार भी होंगे तथा सलाह देने आदि कार्यों में निपुण होंगे। बन्धुवर्ग का आप पूर्ण रूपेण पालन करने वाले होंगे। साथ ही वीरता एवं बहादुरी के गुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहसपूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

विलसति परनारीं लुब्धसम्पत्ति भोगी।
नरपतिरिव चिन्तो मंत्रवाद प्रशस्तः।।
कृशतनुरतियुक्तो बन्धुवर्गस्य भर्ता।
भवति मकरराशिर्दानवो वीरभावः।।
जातक दीपिका

संगीत के क्षेत्र में आप विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपका शरीर सुकान्ति तथा कोमलता से भी सुशोभित रहेगा। जिससे आपका स्वरूप सुन्दरता से युक्त रहेगा।

कलितशीतभयः किल गीतवित्तनुरुषासहितो मदनातुरः।
निजकुलोत्तमवृतिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत्।।
जातका भरणम्

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों की पूजा एवं सेवा करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। साथ ही आप में अभिमान

की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका आप समय समय पर अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करते रहेंगे। आप का हृदय करूणा एवं कोमल भावों से भी युक्त रहेगा अतः दीन दुःखियों के प्रति आपके मन में विशेष दयाभाव रहेगा तथा इस भाव के अनुपालन हेतु आप नित्य प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप में शारीरिक बल पूर्ण रहेगा तथा आपके बल से लोग प्रभावित रहेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कलाओं में आप पारंगत रहेंगे तथा एक श्रेष्ठ विद्वान की तरह समाज में आदरणीय तथा ख्याति प्राप्त होंगे। आपका शरीर कान्ति युक्त रहेगा एवं परिवार के अतिरिक्त अन्य कई जनों का आपके द्वारा पालन किया जाएगा।

आप सर्वप्रकार से धनवैभव सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में आपका सभी वर्गों द्वारा हादिक सम्मान किया जाएगा। आपकी आखें भी बड़ी बड़ी होंगी एवं निशाने बाजी की कला में अत्यन्त ही निपुणता तथा विशेष योग्यता को अर्जित करेंगे। साथ ही आप गौरवर्ण के पुरूष होंगे। इसके अतिरिक्त नगर में आप एक प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपकी आज्ञा पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

नकुल योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वाभाविक रूप से परोपकारी व्यक्ति होंगे तथा दक्षता से अन्य जनों की भलाई के लिए कार्यो को सम्पन्न करने में नित्य तत्पर रहेंगे। आपके इन कार्यों से सभी समाजिक जन आप को हादिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। आप अपने जीवन काल में विपुल धन के स्वामी होंगे तथा अन्य धनाढ्य व्यक्तियों के लिए भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय रहेंगे। आप में उच्चकोटि के विद्वानों के पूर्ण गुण रहेंगे तथा कई सामाजिक संस्थाओं के आप प्रमुख भी रहेंगे। माता पिता का आपके प्रति विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा आप भी उनकी उचित मान सम्मान सहित सेवा करते रहेंगे।

परोपकरणे दक्षो वित्तेश्वरविचक्षणः।
पितृमातृप्रियो नित्यं नरो नकुलयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् नकुलयोनि में उत्पन्न जातस दक्षता के साथ दूसरों का उपकारी, धनियों में सबसे उत्तम और प्रधान तथा पिता-माता में सर्वदा प्रेम बनाए रखने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख

सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दि सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए बैशाख मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, रोहिणी नक्षत्र, वैधृतियोग, शकुनी करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4,9,14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र वैधृतियोग तथा शकुनी करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा क्रयविक्रयादि कार्यों को आरम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि का ही अधिक योग बनेगा। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर एवं सिंह राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अच्छा नही चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए एवं शनिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, लोहा, नीलम, पंच धातु, तिल, तेल, चर्मपादुका आदि पदार्थो का किसी योग्य सुपात्र को शनिवार को दान करना चाहिए। इससे समस्त अशुभ फलों का प्रभाव न्यून होगा तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शनि के मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217